कंचना कुमारी
अतिथि शिक्षक, हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

सन्त एवं सूफी काव्यों की प्रवृत्तियाँ।

सन्त तथा सूफी मतों का उदय हिन्दू-मुसलमानों में एकता की प्रतिष्ठा के लिए हुआ सन्तों ने उसे धार्मिक अभिन्नता के प्रतिपादन द्वारा संपन्न करना चाहा जबकि सूफियों ने दोनों जातियों की सांस्कृतिक एकता द्वारा उसे पूरा किया। संभवत: इस दिशा में सूफियों को अपेक्षाकृत अधिक सफलता मिली। सन्त एवं सूफी मतों में कोई पौर्वापर्य या जन्य-जनक भाव नहीं है। सूफी धर्म का प्रवेश भारत में ईसा की बारहवीं शताब्दी में हुआ था। ईरान और अरब देशों की उपकरणों को लेता हुआ भी यह मत भारतीय वातावरण धर्म संस्कृति और साहित्य से प्रभावित हुआ इन प्रभावों का हम पहले उल्लेख कर चुके कि यह मत भारत भूमि में जन्मा पला अत: इसके सभी उपकरण भारतीय थे। कुछ विद्वानों ने सन्त मत पर आंशिक रूप से इस्लाम का प्रभाव तो पड़ा और ऐसा होना भी स्वाभिक भी था। उस युग में शनै: शनै: संग्राहक बुद्धि हिन्दू और मुसलमानों में उत्पन्न हो चुकी थी और प्रत्येक क्षेत्र में पारस्परिक आदान-प्रदान भी आरंभ हो चुका था।

Scanned with CamScanner

मि । संदेश कुछ मुस्लिम शासक अत्यंत कट्टर और कठोर थे, परन्तु कुछ शासक ऐसे भी थे जो कि सहिष्णु और उदार थे। बाबर शेरशाह और अकबर इसके ज्वलंत उदाहरण है।

सामान्य- (1) दोनों मतावलम्बियों के काव्यों में गुरु या पीर को अत्यन्त महत्व दिया गया है।

(2) दोनों काव्यों में प्रेम का अत्यधिक महत्व स्वीकार किया गया है। दोनों के मतानुसार निराकार प्रेमगम्य है। सन्तों के यहां प्रेम व्यक्ति साधनों में व्यवहृत है जबकि सूफियों ने लौकिक प्रेम कहानियों के द्वारा अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना कर के प्रेम की सार्वभौमिकता दिखाई है।

(3) दोनों साधक है दोनों का साधना-पथ विविध प्रभावों से प्रभावित है दोनों हठयोग है। दोनों का ईश्वर निराकार है। उसे प्राप्त करने को सबको समान अधिकार है, उसमें जाति-पाति, ऊँच-नीच का भेदभाव नहीं है। दोनों की साधिक मान्यताएं प्राय: एक सी है।

(4) माया या शैतान को दोनों ने साधना-पथ व्यवधान के रूप में स्वीकार किया है। सन्तों ने कनक और कामिनी को

माया को प्रतीक माना है सन्तों ने माया को सर्वथा त्याज्य माना है जबकि सूफियों की प्रेम-परीक्षा के लिए उसमें दृढ़ता प्रदान करने के लिए तथा की आवश्यकता स्वीकार की है। शैतान

वैषम्य — (1) सन्तों की प्रणय-भावना विशुद्ध भारतीय है। इन्होंने आत्मा को पत्नी और परमात्मा को पति के रूप में माना है जबकि सूफियों ने आत्मा को प्रियतम और परमात्मा को प्रियतम के रूप में कल्पित किया है।

(2) सन्तों ने हिन्दू-मुस्लिम एकता के उद्देश्य की पूर्ति धार्मिक एकता द्वारा संपन्न की जबकि सूफियों को उस उद्देश्य की उपलब्धि सांस्कृतिक एकता द्वारा अभीष्ट थी और कदाचित इस दि में सूफी अधिक कृतकार्य है।

शेष आगे

Scanned with CamScanner